हिममानव - वास्तविकता या कपोलकल्पना?

डॉ. अरविन्द गुप्ते

संसार के लगभग सभी भागों में एक ऐसे जीव या हिममानव के बारे में किंवदंतियां सुनने को मिलती हैं जिसकी ऊंचाई 8-10 फीट है, शरीर भालू के समान बालों से ढंका है और जो ऊंचे पहाड़ों की बर्फीली चोटियों पर रहता है। उसका भार करीब ढाई सौ किलोग्राम होता है, आंखें बड़ी होती हैं और भौंहें उभरी हुई होती हैं। इसके पंजों के निशानों की लंबाई दो फीट और चौड़ाई आठ इंच होती है। अधिकांश निशानों में पांच उंगलियां पाई जाती हैं किंतु कुछ निशानों में उंगलियों की संख्या दो से छह तक होती है। कुछ निशानों में भालू जैसे नाखूनों के चिन्ह भी पाए जाते हैं। हिममानव में विश्वास करने वालों का कहना है कि यह निशाचर और सर्वाहारी होता है। विभिन्न भाषाओं में इस जीव के अलग-अलग नाम हैं। हिन्दी में इसे हिममानव या येती कहा जाता है।

खुमजुंग मठ में कथित येती की खोपड़ी

किंतु आज तक न तो यह जीव पकड़ा गया है और न किसी ऐसे व्यक्ति ने उसे करीब से देखा है जिसके कथन को विश्वसनीय माना जा सके। हां, एवरेस्ट की चोटी को फतह करने वाले पहले व्यक्ति एडमंड हिलेरी और अन्य पर्वतारोहियों ने हिमालय की बर्फ पर पैरों के ऐसे निशान देखे हैं जो दिखते तो मनुष्य के पंजों के निशानों के समान ही हैं, किंतु उनसे काफी बड़े हैं।

येती को देखे जाने की सबसे अधिक घटनाएं उत्तरी अमरीका और हिमालय (विशेष रूप से नेपाल, तिब्बत और कुछ हद तक लद्दाख) में हुई हैं। रोचक बात यह है कि अमरीका में येती को शिकार करने और पकड़कर चिड़ियाघर में रखने योग्य एक जीव माना जाता है, वहीं नेपाल और तिब्बत में इसे श्रद्धा के साथ देखा जाता है और इसे पूजा जाता है। अतः यह उचित होगा कि हम येती के बारे में इन भिन्न क्षेत्रों के संदर्भ में अलग-अलग चर्चा करें।

अमरीकी येती

अमरीका में युरोप के लोगों के पहुंचने से पहले कई आदिवासी समूह वहां के मूल निवासी थे जिन्हें आजकल रेड इंडियन्स कहा जाता है। पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लगभग सभी रेड इंडियन कबीलों में बर्फ पर रहने वाले किसी विशाल जीव की किंवदंतियां प्रचलित हैं।

युरोपीय लोगों के अमरीका में बस जाने के बाद भी समय-समय पर हिममानव को देखे जाने के दावे किए जाते रहे, किंतु बाद में ये सभी या तो किसी पहाड़ी भालू या पेड़ के ठूंठ तक को हिममानव मान लेने की भूल निकले या फिर जानबूझ कर दिए गए झांसे।

हिमालयी येती

नेपाल के पर्वतीय क्षेत्रों में भ्रमण करने और वहां की ऊंची चोटियों पर चढ़ने वाले पर्वतारोहियों को येती के बारे में अधिक ठोस जानकारी मिलती रही है, किंतु किसी ने आज तक इस जीव को जीवित देखने का दावा नहीं किया है। नेपाल के पहाड़ी क्षेत्र के निवासी शेरपा बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं और इस कारण उस क्षेत्र में लगभग हर गांव में बौद्ध मंदिर या मठ हैं। कई मंदिरों में येती के अवशेषों को रखकर इनकी पूजा की जाती है। पर्यटकों और पर्वतारोहियों ने पेंगबोचे नामक गांव के मठ में एक हाथ की हड्डी एवं बालों सहित खोपड़ी की खाल देखी थी जिनके बारे में कहा जाता था कि वे येती के अवशेष हैं। बाद में अवशेष गायब

हो गए थे और उनके स्थान पर एक कागज़ रखा रहता था जिस पर लिखा था कि एडमंड हिलेरी खाल को जांच के लिए विदेश ले गए थे। जांच के लिए खाल में छेद किए गए जिन्हें बाद में सोने की परत से ढंक दिया गया। इस खाल की मनुष्य एवं अन्य जीवों की खालों से तुलना की गई किंतु किसी के साथ इसकी समानता नहीं पाई गई।

आजकल पेंगबोचे के मठ में न अवशेष हैं और न कागज़ है। यह कह दिया जाता है कि किसी ने अवशेष चुरा लिए। इंग्लैंड के अखबार *डेली मेल* में मार्च 1954 में एक लेख प्रकाशित हुआ था। इसमें कहा गया था कि पेंगबोचे मठ के येती अवशेष के कुछ बालों का प्रोफेसर फ्रेडरिक जोन्स ने गहराई से विश्लेषण किया। इन बालों की कटानें काट कर उनका सूक्ष्मदर्शी से अध्ययन किया गया और उनकी तुलना भालुओं के और ओरांगउटान बंदरों के बालों से की गई। जोन्स इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि ये बाल सिर की खाल के थे ही नहीं। उनका अनुमान था कि ये बाल किसी खुर वाले जानवर के कंधे की खाल के थे।

पेंगबोचे के निकट स्थित खुमजुंग गांव के मठ में भी येती का सिर रखा गया है। मठ में दान देने पर पर्यटकों को ये अवशेष दिखाए जाते हैं। इससे जुड़ी एक रोचक कहानी के अनुसार कई पीढ़ियों पहले खुमजुंग और आसपास के गांवों के निवासी साथ मिल कर एक धार्मिक उत्सव मनाते थे। इसके बदले में अन्य गांवों के निवासी उन्हें कुछ भेंट देते थे। एक बार थामे गांव के निवासियों ने उन्हें भेंट में येती का सिर दिया। इससे नाराज़ हो कर खुमजुंग के निवासी उस सिर को फुटबॉल की तरह लात मारते हुए अपने गांव तक लाए और मठ में रख दिया।

इस क्षेत्र में रहने वाले और पहाड़ों की ऊंची चोटियों पर चढ़ने के लिए विख्यात शेरपा लोग उनके पुरखों के द्वारा येती के देखे जाने की कहानियां तो सुनाते हैं किंतु न तो इन्होंने स्वयं येती को देखा होता है और न ये बहुत विश्वास के साथ इस जीव के अस्तित्व को स्वीकारते हैं।

हिममानव के विषय पर वैज्ञानिक दो परस्पर विरोधी खेमों में बंटे हैं। एक समूह का मानना है कि हिममानव केवल किंवदंती या गलत पहचान (जैसे बड़े भालू को हिममानव मान लेना) का परिणाम हैं या फिर विशुद्ध धोखाधड़ी है। इनके अनुसार यदि हिममानव को अपनी प्रजाति बनाए रखना है तो उनकी काफी बड़ी संख्या होना ज़रूरी है। किंतु ऐसा तो नहीं लगता कि संसार में हिममानव इतनी बड़ी संख्या में हैं।

दूसरे समूह का कहना है कि अभी तक मिले सबूतों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार का कोई जीव हो सकता है। इन्हें अभी हाल में की गई एक खोज से बल मिला है। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के वंशविज्ञानी ब्रायन साइक्स ने हिमालय में पाए गए दो बालों से प्राप्त डीएनए का विश्लेषण करके पाया कि इसमें और नॉर्वे में पाई गई ध्रुवीय भालू की एक विलुप्त प्रजाति के जबड़े की हड्डी के डीएनए में शत प्रतिशत समानता है। भालू का यह अवशेष एक लाख बीस हज़ार वर्ष पुराना है। यह वह समय था जब उत्तरी अमरीका में पाए जाने वाले ग्रिजली भालुओं से ध्रुवीय भालुओं की प्रजाति का विकास हो रहा था।

इन दो बालों में से एक बाल सत्तर के दशक में लद्दाख में किसी स्थानीय शिकारी द्वारा मारे गए किसी अपरिचित जीव का था और दूसरा भूटान के जंगल में एक फिल्म बनाने वाले दल को मिला था। साइक्स का अनुमान है कि ध्रुवीय भालू की उप-प्रजाति के जंतु हिमालय और अमरीका में फैल गए और वहां के स्थानीय भालुओं के साथ उनका संकरण हो कर बना विशाल भालू जिसके हिममानव होने की संभावना है।

इटली के पर्वतारोही राइनहोल्ड मेसनर दुनिया के पहले व्यक्ति थे जो एवरेस्ट के शिखर पर बिना ऑक्सीजन सिलेंडर लिए चढ़े थे। उन्होंने हिमालय क्षेत्र में कई वर्ष बिताए और हिममानव के बारे में काफी अध्ययन किया। मेसनर का दावा है कि उनका हिममानव से आमना-सामना हुआ था और यह तिब्बती भालू की एक प्रजाति ही है।

किंतु इस कहानी में भी पेंच है। साइक्स ने अपने शोध का विवरण किसी वैज्ञानिक पत्रिका में प्रकाशित करने से पहले ही मीडिया को इसकी जानकारी दे दी, और मीडिया ने वही किया जो वह प्रायः करता है - इसे एक सनसनीखेज खबर बना दिया। जब कोई लेख किसी वैज्ञानिक पत्रिका में

प्रकाशित होता है तब वैज्ञानिक जगत में उस पर चर्चा होती है और उसकी विश्वसनीयता प्रमाणित या अप्रमाणित होने पर ही उसे सही या गलत माना जाता है।

सारांश में यह कहा जा सकता है कि हिममानव की पहेली को लेकर हम आज वहीं खड़े हैं जहां बरसों पहले थे। क्या सचमुच ऐसा कोई जीव है? यदि है तो क्या वह भालू की कोई अज्ञात प्रजाति है या किसी मानव सदृश बंदर की? या वह आदिमानव और बंदर का संकर है? अभी इन सवालों के पक्के जवाब किसी के पास नहीं हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***

फॉर्म 4 (नियम - 8 देखिए)

मासिक स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बंध में जानकारी

प्रकाशन : भोपाल
प्रकाशन की अवधि : मासिक
प्रकाशक का नाम : (अरविन्द सरदाना)
निदेशक, एकलव्य
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-10 शंकर नगर
बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462017
मुद्रक का नाम : (अरविन्द सरदाना)
निदेशक, एकलव्य
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य
एकलव्य, ई-10 शंकर नगर
बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462017
सम्पादक का नाम : सुशील जोशी
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-10 शंकर नगर
बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462 017
उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर
स्वामित्व है : (अरविन्द सरदाना)
निदेशक, एकलव्य
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-10 शंकर नगर
बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462 017

मैं अरविन्द सरदाना, निदेशक, एकलव्य यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

अरविन्द सरदाना,
निदेशक, एकलव्य

1 जनवरी 2014